डॉ० चन्दा कुमारी
गेस्ट टीचर, हिन्दी विभाग,
रोहतास महिला महाविद्यालय, सासाराम रोहतास
बी० ए० पार्ट - I , पेपर - II

7/5/2020 (1)

'कफन' कहानी प्रेमचन्द

'कफन' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा :—

कफन कहानी में ~~अछूतों~~ दलित चेतना 'कफन' 'कफन' कहानी में उनकी कला की प्रौढ़ता कहानी है। वातावरण-प्रधान सामाजिक कहानी है। यहाँ लेखक मनोविज्ञान को आधार बनाकर कहानी की रचना में प्रवृत्त हुआ है। जीवन का यथार्थ एवं स्वाभाविक चित्रण उसका ध्येय बन गया है। विद्वानों ने कहानी-कला के छः तत्वों को स्वीकार किया है, जिनके परिप्रेक्ष्य में 'कफन' कहानी की समीक्षा करना निम्नांकित रूप से समीचीन होगा।

इस कहानी के कथानक की सर्जना मनोविज्ञान की अनुभूति के धरातल पर हुई है। यह अत्यन्त सुगठित एवं सुव्यवस्थित है तथा इसमें केवल एक संवेदना का सूत्र सम्पूर्ण कथानक की सृष्टि में प्रयुक्त ~~है~~ हुआ है। इस कहानी में कथानक की मूल संवेदना यह कि आधुनिक आर्थिक विषमता, बेरोजगारी और निकम्मे समाज-व्यवस्था

की कारण सर्वहारा वर्ग कितना स्वार्थी, कामचोर
और जड़ हो जाता है कि वह अपनी मृतक पुत्रवधू
और ~~पत्नी~~ पत्नी के कफ़न के लिए एकत्र चन्दे
के धन को शराब पीने में व्यय कर डालता है
और अन्त में अपने कुकृत्य का समर्थन करने
के लिए समाज की रीति-रिवाज को कोसता हुआ
कहता है कि "कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते
जी, तन ढकने को चीथड़ा भी न मिले उसे मरने पर
कफ़न चाहिए। कफ़न लाश के साथ जलकर
राख हो जाता है। इस प्रकार, कहानी का ~~आर~~
आरम्भ घीसू और माधव की दीन-हीन एवं
आर्थिक समस्या से होता है। ~~इनके~~ जिसमें
कहानीकार यह दिखाता है कि माधव की
पत्नी को बच्चा होने वाला है, वह प्रसव-वेदना
से छटपटा रही है, जबकि झोपड़े के द्वार पर
अलाव के सामने घीसू और माधव दोनों बाप-
बेटे चुपचाप बैठे यह इन्तजार कर रहे हैं कि
पत्नी मरे और घर में शान्ति हो। इसके उपरांत
कथानक में उत्तेजक घटना आती है। जब माधव
की स्त्री मर जाती है तो पहले तो दोनों छाती
पीटकर हाय-हाय करते हैं, फिर-फिर कर लकड़ी
के लिए चन्दा इकट्ठा करते हैं। इसके अनन्तर कथानक
के घात-प्रतिघात का रूप में घात-प्रतिघात का अच्छा
दिखाया गया है। बाप-बेटे दोनों कफ़न खरीदने के
लिए दुकान पर जाते हैं, कुछ न खरीदकर कई दुकानों
का चक्कर लगाते हैं और शाम हो जाती है। कथानक
चरम सीमा तक आता है, ~~x~~ जब बाप-~~बेटे~~
बेटे ~~अनायास~~ किसी दैवी प्रेरणा से एक शराबखाने

Scanned with CamScanner

के सामने जा पहुँचते हैं और कफ़न के पैसे से तली हुई मछलियाँ आदि खाकर - पेट भरकर शराब पीते हैं और अन्ततः नशे में बेसुध होकर वहीं गिर जाते हैं। इस प्रकार, इस कहानी में ग्रामीण-जीवन की दरिद्रता और बेकारी का सफल चित्रण हुआ है।

घीसू और माधव का चरित्र चित्रण

इस कहानी में मुख्यतः दो पात्र हैं घीसू और उसके पुत्र माधव का वर्णन आया है। दोनों ही निम्न श्रमिक-वर्ग से सम्बन्धित हैं दोनों आराम तलब, कामचोर और बदनाम हैं, कोई उन्हें काम पर नहीं बुलाता, अभी विवशता में किसी ने बुलाया भी तो आधा काम करेंगे. एक जगह चिलम पियेंगे, यदि एक दिन काम करते तो तीन दिन आराम करते। जब फाके पड़ने की नौबत आती तो एक पेड़ से लकड़ियाँ तोड़ना, घीसू उसे बाजार में बेचकर पेट-पूजा का जुगाड़ करना। अपनी हरामखोरी प्रवृत्तियों के कारण भी मजदूरी नहीं पाते आर्थिक विपन्नता ने दोनों को निर्दयी कठोर एवं हृदयहीन बना दिया है तभी तो घर में बुधिया प्रसव-पीड़ा से तड़प-तड़प कर प्राण दे देती है और वे दोनों अलाव पर बैठे-बैठे चोरी के भुने आलुओं को खाने में मग्न हैं। ये उसकी चीख सुनते हैं, लेकिन उसके पास जाते भी नहीं हैं और वह मर

जाती है। इस प्रकार इसको धारणा तथा विषमता एवं आर्थिक परिस्थिति किसी भी संवेदनशील मनुष्य के दिल को दहला देती है और इस समाज की विषम आर्थिक संरचना पर सोचने के लिए बाध्य कर देती है।

कहानी का कथोपकथन :- प्रेमचन्द जी ने संवादों के माध्यम से पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन अत्यन्त मार्मिक एवं कलात्मक ढंग से किया है। ये संवाद कथा सूत्र को आगे बढ़ाने में सहायक बने हैं। उन्होंने अपने पात्रों के मनोभावों का चित्रण मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर किया है। वे जानते थे कि कौन पात्र किस परिस्थिति में कैसे मनोभावों को व्यक्त करता है

कहानी का उद्देश्य :- उद्देश्य की दृष्टि से यह कहानी यथार्थवादी है। आर्थिक विषमता वाले जिस समाज में एक ओर जमींदार धनी-मानी और बड़े लोग बड़े-बड़े ~~भोजों का~~ जुगाड़ दुनिया के सारे आनन्द लेते हैं तथा निर्धन मजदूर एवं किसान रात-दिन कठिन परिश्रम करके भी तो पेट की रोटी का जुगाड़ नहीं कर पाते वहीं घीसू और माधव की कामचोर हो जाने की स्थिति को उचित माना। लेखक ने यहाँ किसानों मजदूरों में चेतना जगाने का प्रयास किया है आर्थिक शोषण के विरुद्ध क्रान्ति-भावना भरना उनका उद्देश्य बन गया है। ~~आर्थिक~~ गरीब व्यक्ति को किस स्तर तक संवेदना शून्य और जड़ ...

बना सकती है। घीसू और माधव इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। किसी भी सभ्य समाज की आर्थिक स्थिति की ऐसी विषमता चिन्तनशील प्राणी को सोचने पर अवश्य बाध्य करेगी।

Scanned with CamScanner